श्यामा

सत्र:-2022-2023

सप्तम् संस्करण.....

'श्री रामनारायण शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित'

'कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट'

देवरी रोड, भाटापारा

(पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से संम्बध्दता)

Email Id- kksitbhatapara@gmail.com Website- kksit.co.in

सत्र- 2022-23 सप्तम् संस्करण

श्यामा

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट

देवरी रोड भाटापारा

श्रीरामनारायाण शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रवृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥ ॥

जो विद्या की देवी भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की हैं और जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमलों पर आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर शङ्कर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही सम्पूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली माँ सरस्वती हमारी रक्षा करें।

स्व.श्री पं. रामनारायण बृजभुषणलाल शुक्ल

स्व.श्री पं. कमलाकांत रामनारायण शुक्ल

प्रबंधन समिति सदस्य
श्रीरामनारायण शिक्षण संस्थान

श्री मनीष शुक्ला जी
अध्यक्ष

श्रीमति श्यामा शुक्ला जी
उपाध्यक्ष

श्रीमति अंजली शुक्ला जी
सचिव

सदस्यगण - श्री राकेश गुप्ता (कोषाध्यक्ष) रेणु साह (संयुक्त सचिव)

श्री बसंत मिश्रा (सदस्य) श्री दिनेश मिश्रा(सदस्य)

शिवरतन शर्मा
विधायक
छत्तीसगढ़ विधानसभा (छ.ग.)
उपाध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी-छत्तीसगढ़

निवास :
सुभाष वार्ड, भाटापारा
जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.) पिन 493 118
मों. 94252-06885, 98261-06885
E-mail. : shivratansharma.bjp@gmail.com

अई शास.पत्र क्र. 587/2022/अ.वि.स.
भाटापारा, दिनांक 28/12/2022

"शुभकामना संदेश"

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड़ भाटापारा द्वारा महा विघालयीन वार्षिक पत्रिका **"श्यामा" सप्तम् संस्करण** का प्रकाशन किया जा रहा है। ऐसी पत्रिकाऐं छात्र-छात्राओं में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस पत्रिका में महाविघालय के रचनाशील प्राध्यापकों तथा विघार्थियों की रचनाऐं प्राथमिकता से प्रकाशित की जानी चाहिए। पत्रिका के माध्यम से महाविघालय की शैक्षणिक गतिविधियों और विशेषताओं की जानकारियाँ भी लोगों तक पहुँचती है, प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो। इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं।

(शिवरत शर्मा)

जिला शिक्षा अधिकारी

जिला शिक्षा अधिकारी

शुभकामना संदेश .....

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं कि कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालयीन पत्रिका **"श्यामा" सप्तम् संस्करण** का प्रकाशन किया जा रहा है, जो अत्यंत सराहनीय कार्य है। इस तरह के विद्यालयीन पत्रिका प्रकाशन में छात्र/छात्राओं के स्वरचित लेख, कविता एवं निबंध आदि को प्रकाशित करने का अवसर मिलता है, जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ–साथ रचनात्मक गुणों का विकास होता है। अतः पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये महा. विद्यालय परिवार एवं सभी छात्र/छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

इसके लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जिला शिक्षा अधिकारी
बलौदाबाजार–भाटापारा

अध्यक्ष की कलम से.....

शिक्षा का अर्थ हैं .– तथागत बुध्दि के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के समन्वित विकास के प्रक्रिया। शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को बड़े स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है तथा इसके साथ ही यह समाज में लोगों के बीच के सभी भेदभावों को हटाने में भी सहायता करती है। यह हमें अच्छा अध्ययन कर्ता बनने में मदद करती है और जीवन के हर पहलू को समझने के लिए सूझ–बूझ को विकसित करती है। यह सभी मानव अधिकारों, सामाजिक अधिकारों, देश के प्रति कर्तव्यों और दायित्वों को समझने में हमारी सहायता करती है।

उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। सुखी जीवन जीने के लिए तैयार होने के लिए एक बच्चे के विकास में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है।नई शिक्षा नीति पहले की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पुनर्मूल्यांकन है। यह नई संरचनात्मक रूपरेखा द्वारा शिक्षा की संपूर्ण प्रणाली का परिवर्तन है।नई शिक्षा नीति में रखी गई दृष्टि शिक्षा प्रणाली को एक उच्च उत्साही और ऊर्जावान नीति में बदल रही है। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी को उत्तरदायी और कुशल बनाने का प्रयास हैं। महाविद्यालयीन शैक्षणिक/अशैक्षणिक गतिविधियों को साझा करने एवं छात्र–छात्राओं की साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने हेतु वार्षिक पत्रिका **"श्यामा" सप्तम् संस्करण** का प्रकाशन किया जा रहा है छात्रों के सर्वांगीण विकास का प्रतिबिंब, इस पत्रिका के माध्यम से प्रकट हो ऐसी आशा है । संपादक मण्डल सहित समस्त महाविद्यालयीन अधिकारी, प्राध्यापकगण, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं को असीम शुभकामनाएं.....

अध्यक्ष
श्री मनीष शुक्ला
श्रीरामनारायण शिक्षण संस्थान

उपाध्यक्ष की कलम से.....

शिक्षा का उदेश्य हर एक मानव का हक हैं. इसका अधिकार सभी को मिलाना चाहिए. क्योकि शिक्षित व्यक्ति सिर्फ अपना ही भाग्य नहीं संवारता अपितु वह समाज में फैली कुरुतियो को भी मिटाता हैं मानवी और सामाजिक कार्यों में अपनी भूमिका भी निभाता हैं और अपने देश को उन्नति की और ले जाने में अपना योगदान भी देता हैं।

इसी लिए हम सभी का कर्तव्य बनता हैं सभी शिक्षित हो और शिक्षा हर घर तक पहुंचे। शिक्षा के महत्त्व को लोगो तक पहुचना और शिक्षा के प्रति बढ़ावा देना और शिक्षा के सम्मान में लोगो को प्रोत्साहित करना की हमारे महाविद्यालय की अग्रिम भूमिका हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि संस्थान की वार्षिक पत्रिका **7वाँ संस्करण "श्यामा"** शीर्षक के साथ प्रस्तुत है। पत्रिका में हमारे संस्थान के विद्यार्थियों, संकाय प्राध्यापकों अधिकारियों और कर्मचारियों एवं सदस्यों ने अपने अनुभवों को अपनी रचनाओं के माध्यम से हम सभी के साथ साझा किया है। पत्रिका में शैक्षिक गतिविधी लेखों का समावेश किया गया है जो अत्यंत सहज भाव से पाठकों का ज्ञानवर्धन करती हुई प्रतीत होती हैं। मैं, सभी रचनाकारों विशेष रूप से पत्रिका के सम्पादक मंडल को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ तथा आशा करती हूँ कि **"श्यामा"** पत्रिका पाठकों में अपनी लोकप्रियता को और मज़बूत करेगी और आने वाले समय में भी पत्रिका अपनी उपयोगिता सिद्ध करती रहेगी। "श्यामा" दिन–प्रतिदिन और आकर्षक तथा लोकप्रिय बने ऐसी मेरी अभिलाषा है। इन्ही शुभकामनाओं के साथ आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ!

उपाध्यक्ष
श्रीमति श्यामा शुक्ला
श्रीरामनारायाण शिक्षण संस्थान

सचिव की कलम से.....

घर शिक्षा प्राप्त करने का पहला स्थान है और सभी के जीवन में अभिभावक पहले शिक्षक होते हैं। हम अपने बचपन में, शिक्षा का पहला पाठ अपने घर विशेष रुप से माँ से प्राप्त करते हैं। हमारे माता–पिता जीवन में शिक्षा के महत्व को बताते हैं। जब हम 3 या 4 साल के हो जाते हैं, तो हम स्कूल में उपयुक्त, नियमित और क्रमबद्ध पढ़ाई के लिए भेजे जाते हैं, जहाँ हमें बहुत सी परीक्षाएं देनी पड़ती है, तब हमें एक कक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण मिलता है

एक–एक कक्षा को उत्तीर्ण करते हुए हम धीरे–धीरे आगे बढ़ते हैं, तब उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसके बाद, तकनीकी या व्यवसायिक उपाधि अध्ययन शुरु कर देते हैं, जिसे उच्च शिक्षा भी कहा जाता है। उच्च शिक्षा सभी के लिए अच्छी और तकनीकी नौकरी प्राप्त करने के लिए बहुत ही आवश्यक है।

इसी क्रमानुसार साथ ही हम अपनी बचपन के यादों को सहेज कर रखतें है इसी प्रकार महाविद्यालय की शैक्षिक गतिविधीयों को सहेज तथा यादों को बनाये रखने हेतु प्रतिवर्ष की भॉति वार्षिक पत्रिका **"श्यामा" सप्तम् संस्करण** का प्रकाशन किया जा रहा हैं। जो साहित्यिक एवं समस्त गतिविधियों में प्रदर्शन करना हमारे प्रयासों को साकार रूप देता है। ये सब महाविद्यालय के प्रतिभावान प्राध्यापकों व होनहार छात्र–छात्राओं के अथक प्रयास का परिचायक है । महाविद्यालयीन परिवार को इस हेतु हार्दिक बधाई ।

सचिव
श्रीमति अंजली शुक्ला
श्रीरामनारायण शिक्षण संस्थान

प्राचार्य की कलम से.....

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट भाटापारा के इस पटल पर आप सभी का हार्दिक स्वागत हैं हम अत्यंत गौरवान्वित हैं कि सत्र 2012 से संचालित इस संस्था ने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिष्ठा बनाई हुई हैं और यह संस्था श्रेष्ठ गुणवत्ता के द्वारा नवीनतम मानदण्ड स्थापित कर रही हैं।

शिक्षा मनुष्य का शारीरिक मानसिक आत्मिक बौद्धिक एंव सामाजिक विकास करती है। हमारे महा. विद्यालय में व्यक्तित्व के सर्वागींण विकास के लिए शैक्षणिक सांस्कृति सामाजिक खेलकूद एंव नैतिक मूल्यपरक कार्यक्रमों की समृद्ध श्रृंखला वर्ष पर्यान्त चलती रहती हैं जिससे लाभान्वित छात्र कौशल सम्पन्न होकर आत्मनिर्भर भारत अभियान के संवाहक बने हुए हैं हमारा ध्येय "ज्ञानं परंम् बलम्" को चरितार्थ करने के मार्ग पर महाविद्यालय सदा अग्रणी हैं ज्ञान प्राप्ति ही सर्वोत्तम शक्ति हैं इसके लिए अनुशासन,जिज्ञासा,सतत् स्वाध्याय, धैर्य और प्रतिबद्धता परम आवश्यक हैं इनकी अनुपालना से आपका जीवन लक्ष्य सहजतापुर्वक सिद्ध हो सकता हैं महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण छात्र–छात्रायें विभिन्न क्षेत्रों एंव सम्मानित सेवाओं में विशिष्ट उपलब्धियों के द्वारा गौरव का प्रतीक बने हुए हैं। महाविद्यालय के प्राध्यापक वर्ग अतयन्त सुयोग्य, कर्मठ छात्र हितैषी एंव अनुभवी हैं इस कारण हमारे छात्र विश्वविद्यालय की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करते रहे हैं। मुझे पूरा विश्वायस हैं कि आप इस गरिमामयी परम्परा को आगे बढ़ाएगें। आप अच्छा एंव निष्ठापुर्वक शिक्षकों का आर्शीवाद मार्गदर्शन प्राप्त करें। मैं महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकगणों को शुभकामनायें देती हूँ. कि वे समाज के इस पथ पर सदा अग्रणी रहें। .....

.....

प्राचार्य
डॉ. वंदना चौहान
कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट
देवरी रोड भाटापारा

संपादक की कलम से.....

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट का मूल उद्देश्य छात्रों में मानवीय गुणों के विकास के साथ अर्थोपार्जन और आजीविका प्राप्ति में भी सक्षम करापना हैं। इसी दृष्टि से रोजगारपरक शिक्षा पर दिया जा रहा हैं साथ ही साथ विभिन्न कौशलों में सक्षम बनाने का कार्य भी किया जा रहा हैं जिससे छात्र स्वरोजगार अपना स्थापित कर सकें। इन्ही उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट भाटापारा में आज 10 वर्षों से कार्यरत हैं

यह महाविद्यालय पिछड़ें कृषक बाहुल्य ग्रामीण अंचल में स्थित हैं। महाविालय इस अंचल में उच्च शिक्षा के विकास में महत्वपुर्ण योगदान दे रहा हैं कला , वाणिज्य, विज्ञान एंव कम्प्यूटर विज्ञान, तथा शिक्षा संकाय में स्नातक स्तर की शिक्षा के अलावा पी.जी. डिप्लोमा इन कम्प्यूटर विज्ञान की शिक्षा भी उपल्बध हैं भविष्य में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

ग्रामीण अंचल में स्थित इस संस्था में 400 छात्र–छात्राऐं अध्ययनरत हैं जिनमें से अधिकतर निम्न सामाजिक आर्थिक वर्ग के विद्यार्थी हैं। इसी श्रेणी में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए सांस्कृति, खेलकूद अन्य पाठ्येत्तर गतिविधियों में पत्रिका लेखन का कार्य भी छः वर्षो से हो रहा हैं। "श्यामा" पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी एवं छात्र–छात्राओं के अभिरूची सृजानात्कता को दिशा प्रदान की जा रही हैं। छात्रों के उत्कृष्ट प्रदर्शन एंव गतिविधियों का अवलोकन गणमान्य जनों एंव अभिभावकों के द्वारा किया जा सकें। अतः इस क्षेत्र में संस्था कार्यरत हैं।

"श्यामा" पत्रिका के प्रकाशन एंव टंकन और अभिलेख तथा प्रिटिंग हेतु महाविद्यालय के सभी प्रबंधन समिति एंव सहायक प्राध्यापकगण , लिपिक, तृतीय श्रेणी कर्मचारी सभी को शुभकामनायें देती हूँ। तथा महा. विद्यालय प्रगति की ओर सदा अग्रसर रहें। .....

"श्यामा"

–: संपादक मंडल :–

सुश्री नेहा सिंह , सुश्री भावना हेंवार , श्रीमति पूर्णिमा कौशिक,
डॉ. वंदना चौहान , सुश्री अनुपमा उमरें ।

–: डिजाइनिंग एंव कम्पोजिशन :–

श्री गौकरण यादव , श्री मोरजध्वज जायसवाल , श्री राकेश बद्येल ,
श्री भुपेन्द्र यादव , श्री ओमप्रकाश साहू

–: छात्र संपादक :–

राहूल देवांगन , राकेश कुमार, श्रीकांत जायसवाल
अनामिका वर्मा, श्रेया वर्मा, रिया वर्मा, अकांक्षा वर्मा, कुमकुम
बंजारें , द्विया गनवीर

"श्यामा"

—: शिक्षकगण :—

प्रवीन बिश्वास, रूपेन्द्र कुमार साहू, गुलशन कूमार गेंदलें, सुश्री नेहा सिंह , सुश्री भावना हेंवार , श्रीमति पूर्णिमा कौशिक, डॉ. वंदना चौहान , सुश्री अनुपमा उमरें, श्रीमति सुषमा दुबें , श्रीमति प्रमिला शर्मा , सुश्री सरोजनी वर्मा , श्रीमति वंदना मसीह , सुश्री सेफाली शुक्ला , सुश्री लता साहू ,

पाठ्यक्रम .....

1. बीएड
2. बीए
3. बीकॉम
4. बीएससी
5. बीसीए
6. पीजीडीसीए
7. डीसीए

KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE DEORI ROAD BHATAPARA

Top 3 Students Session 2020-22B.Ed Students

HIMANSHU SHARMA

84.118%

AARTI

83.588%

CHANDRA SHEKHAR SAHU

83.294%

Top 3 Students Session 2021-22 PGDCA Students

Mrityunjay Sharma

80.5%

Bhumika Sahu

79.9%

Jyoti

79.8%

Top 3 Students Session 2021-22 DCA Students

Gunja Padwar

81.42%

Raja Verma

78.25%

Topesh Kumar

77.67%

Top 3 Students Session 2020-22 B.Com III Year Students

Soumya Bajaj

67.11%

Sandeep Tandan

64.67%

Roshan Kumar

64.5%

प्रिंट मिडिया समाचार

प्रशिक्षित छात्राओं को सर्टिफिकेट वितरण किया
निःशुल्क सौंदर्य प्रशिक्षण का छात्राओं ने लिया लाभ

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भाटापारा. कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट भाटापारा में सात्विक निःशुल्क सौंदर्य प्रशिक्षण का शिविर का समापन हुआ। यह प्रशिक्षण 26 अगस्त से प्रारंभ होकर 3 सितम्बर तक चला। इस प्रशिक्षण में आस पास के गांवों की लड़कियां और तरेंगा स्कूल के छात्राओं ने बड़ी संख्या में प्रशिक्षण का लाभ लिया।

प्रशिक्षण के पश्चात प्राचार्य द्वारा प्रशिक्षित छात्राओं को सर्टिफिकेट वितरण किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। सौन्दर्य प्रशिक्षण का सफल आयोजन कराने में महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जीवन का अनुभव साझा किए
विद्यार्थियों को औद्योगिक क्षेत्र का भ्रमण कराया गया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भाटापारा. कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा में आईक्यूएसी के द्वारा वाणिज्य विभाग के छात्र-छात्राओं को एसके इंडस्ट्रीज का औद्योगिक भ्रमण कराया गया। इसमें उद्योग के संचालन, प्रबंधन बिक्री एवं विपणन सम्बंधित जानकारी एसके इंडस्ट्रीज के संचालक नवल भूषणिया ने विद्यार्थियों को दी। छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए अपने प्रेरणादायक जीवन का अनुभव साझा किए।

छात्र-छात्राओं द्वारा वाणिज्य विषय से संबंधित प्रश्नों का उत्तर प्रदान किया गया। इस मौके पर महाविद्यालय के आईक्यूएसी समन्वयक विभव गुप्ता और वाणिज्य विभाग के सहायक प्राध्यापकगण मौजूद थे। महाविद्यालय के संचालक तथा प्राचार्य ने उक्त कार्यक्रम की सराहना की।

छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण

भाटापारा। कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा के सभी छात्र-छात्रों एवं प्रशिक्षार्थियों को दाऊ कल्याण सिंह महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र भाटापारा में शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जाया गया। इस कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक एवं वैज्ञानिक डॉ. देवेन्द्र उपाध्याय के द्वारा छात्रों को व्याख्यान के साथ साथ ऑर्गेनिक खेती व मशरूम संवर्धन तथा हाइटेक नर्सरी में संचालित पौधे को देख रेख व वहां का वातावरण संबंधित संपूर्ण जानकारी प्रदान की गई यह बताया गया की ऑर्गेनिक खेती से स्वयं के स्वास्थ्य को बेहतर एवं मशरूम की खेती से कैसे रोजगार प्राप्त कर सकते है इससे हमारे महाविद्यालय के छात्र छात्रों सहायक प्राध्यापकों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा। इस कार्यक्रम में इंस्टीट्यूट के प्राचार्य डॉ वंदना चौहान समस्त छात्र छात्राओं व सहायक प्राध्यापकगण उपस्थित रहे।

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट में कैरियर गाइडेंस का आयोजन

भाटापारा (असं)। कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी भाटापारा में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तरेंगा के द्वारा शनिवार को कैरियर गाइडेंस का आयोजन किया गया । जिसमे (सभी कोर्स), बी.ए., बी.एस.सी. बी.कॉम. डी.सी.ए. पी.जी.डी.सी.ए. बी.सी.ए. स्नातक स्तर पर हो रहे कॉर्सेस की जानकारी दी गई। जिसमें मुख्य रूप से कमलाकांत के सभी सहायक प्राध्यापक एवं स्टॉफ उपस्थित थें।

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट में जन्माष्टमी उत्सव मनाया

अमृत संदेश | भाटापारा

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट में जन्माष्टमी उत्सव बड़ी ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महाविद्यालय के छात्राओं के अनुसार कृष्णजी की विभिन्न लीलाओं को झांकी के रूप में भातखंड, कृष्ण अर्जुन उपदेश, कृष्ण सुदामा मिलन एवं गोवर्धन पर्वत की मनमोहक झांकियां जनमानस के हृदय को स्पर्श और कला वर्गों में प्रदर्शित किया भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को जन जागरण के माध्यम से जन मानस तक पहुँचाया इन्हीं भावों को कार्यक्रम के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दिये। छात्र-छात्राओं के द्वारा नृत्य की प्रस्तुति ने लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। कार्यक्रम के दौरान संस्था के संचालक श्री मनीष शुक्ला एवं प्राचार्य डॉ. वंदना चौहान व सभी सहायक प्राध्यापकगण के सानिध्य में कृष्ण जी को भव्य आरती संगीतमय वातावरण में गायन किया गया।

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया

भाटापारा- कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा में आजादी के अमृत महोत्सव 75 वां वर्ष के अंतर्गत छात्र-छात्राओं द्वारा हर घर तिरंगा रैली ग्राम देवरी में निकाली गई तथा महाविद्यालय परिसर में संस्था के संचालक मनीष शुक्ला द्वारा ध्वजारोहण किया गया। व छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति के गीत में डांस प्रस्तुत किया गया। संस्था के संचालक और प्राचार्य, ने प्राध्यापकगण व सभी छात्र-छात्राओं को स्वतंत्रता दिवस पर बधाई दी गई।

कमलाकांत शिक्षक दिवस संपन्न

भाटापारा। कमलाकांत शुक्ला महाविद्यालय में शिक्षक दिवस समारोह उत्साह के साथ मनाया गया। प्राचार्य डॉ. वंदना चौहान ने सभी शिक्षकों की उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुये प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट
देवरी, भाटापारा

भाटापारा, छत्तीसगढ़, भारत
Lat 21.761149°
Long 81.937254°
21/07/22 10:57 AM
Google

भाटापारा, छत्तीसगढ़, भारत
Lat 21.761149°
Long 81.937254°
08/07/22 02:47 PM
Google

Baloda Bazaar, Chhattisgarh, India
Deori QW9M+909, Baloda Bazaar, Chhattisgarh 493118, India
Lat 21.768843°
Long 81.933209°
25/07/22 02:26 PM
Google

भाटापारा, छत्तीसगढ़, भारत
Lat 21.761149°
Long 81.937254°
29/07/22 12:29 PM
Google

भाटापारा, छत्तीसगढ़, भारत
भाटापारा, छत्तीसगढ़ 493118, भारत
Lat 21.761049°
Long 81.937072°
01/11/22 01:01 PM GMT +05:30
Google

Bhatapara, Chhattisgarh, India
kamlakant shukla institute b.ed QW6P+FM4, Bhatapara, Chhattisgarh 493118, India
Lat 21.761163°
Long 81.937116°
14/11/22 12:46 PM GMT +05:30
Google

जय हिन्द

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India
kamlakant Shukla institute deori road bhatapara QW6P+FM4, deori road bhatapara, Chhattisgarh 493118, India
Lat 21.761094°
Long 81.936613°
05/01/23 03:31 PM GMT +05:30

बी.एड शिक्षक के विचार

हौंसला .....

अपने मनोबल को इतना सशक्त कर , कठिनाई भी आने से न जाए डर।
आत्मविश्वास रहे तेरा हमसफर , बड़े–बड़े कष्ट न डाल पाएं कोई असर।

हौसला अपना बुलंद कर लो , साहस व हिम्मत को संग कर लो।
निर्भय होकर आत्मविश्वास से बढ़ो , संयम व धैर्य से सफलता की सीढ़ी चढ़ो।
जब कभी कर्तव्य के मार्ग पर , विपत्ति व विघ्न तुम्हें सताएंगे।
जब कभी हारकर या विवश होकर , निराशा के बादल छा जाएंगे।
हार न मानने का जज्बा तुम्हें उठाएगा , तुम्हारा अडिग हौसला तुम्हें बढ़ाएगा।
भय–विस्मय का अब अंत करो , आते हुए दुखों को पसंद करो।
कर्म ज्यादा व बातें चंद करो , हौसला अपना इतना बुलंद करो।
दुखों का पहाड़ टूटने पर भी , सीना ताने खड़ा रह पाएगा।
दर्द का अंबार फूटने पर भी, सर उठाकर सतत् चलता जाएगा।
जो अपने पक्के इरादों के आगे, मुसीबतों के घुटने टिका जाएगा।
वही सुदृढ़ मनोबल वाला मनुष्य, जिंदगी की यह जंग जीत पाएगा।

श्रीमति पूर्णिमा कौशिक
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

एक शिक्षक ..... भावी शिक्षक तैयार करने जा रहा हैं आपको संघर्ष करना होगा।
जितना डाट हमने लगाया , शायद ही आपने कहीं और डाट खाया होगा।
बहुत सी जिम्मेदारियां को लिए हुए जीवन की कठिनाईयों से लड़ना सिखाते हैं हम
क्या सुख क्या दुख हर परिस्थिति में हसंना सिखाते हैं हम .।
समुद्र रूपी जीवन में नईया पार कराते , लक्ष्य तक पहुचनें के लिए एक छोर से दुसरे छोर साथ लेकर जाते हैं हम।
एक शिक्षक भावी शिक्षक तैयार करने जा रहे हैं आपको संघर्ष करना होगा।
हमने तो आपको रास्ता दिखाया है। अब उस मंजिल तक आपको आगे बढ़ना होगा , जीवन की कठिनाइयों को मुस्कुरातें हुए अपने लक्ष्य को पाना होगा।
एक शिक्षक भावी शिक्षक तैयार कर रहे हैं आपको तो संघर्ष करना होगा।

सुश्री भावना हेंवार
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

नाम की अनूठी महत्ता

गुरु नानकदेवजी एक बार किसी तीर्थस्थल पर गए हुए थे। अनेक व्यक्ति उनके सत्संग के लिए वहाँ जुट गए । एक व्यक्ति ने हाथ जोड़कर प्रश्न किया, 'बाबा, मुझ जैसे साधारण गृहस्थ के कल्याण का सरल उपाय बताएँ। '

गुरुजी ने कहा, 'ईश्वर को हरदम याद करनेवाला और सादा व सात्त्विक जीवन जीने वाला व्यक्ति सहज ही अपना कल्याण कर लेता है। तुम प्रेम व भक्ति से भगवान् के पवित्र नाम का सुमिरण करो, उस नाम रूपी परम तत्त्व से एकरूप हो जाओ, जीवन सार्थक होते देर नहीं लगेगी। '

गुरु नानकदेवजी ने आगे कहा, 'भगवान् के नाम में बड़ी अनूठी शक्ति है। उसके नाम का जाप मनुष्य के समस्त पापों और दुःखों को धोने की क्षमता रखता है।
भगवान् का नाम हर तरह के विकारों और दुर्व्यसनों को दूर करके मानव को सद्गुणों से संपन्न करता है । ईश्वर के नाम जपने से व्यक्ति वासना मुक्त हो जाता है और पुनर्जन्म के चक्कर से छुटकारा पाकर अंततः मोक्ष को प्राप्त करता है।'

आत्म कल्याण का सरल उपाय बताते हुए गुरुजी ने कहा, 'सत्य, सद्विचार, सदाचार, प्राणियों के प्रति दया भावना, ईश्वर की स्तुति और गुणगान से मानव अपना कल्याण कर सकता है ।

इसलिए हर व्यक्ति को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु, मुझे अपनी शरण में चाहे जिस भी अवस्था में रख, तेरी शरण के अतिरिक्त मेरा कोई और आश्रय नहीं है। जो व्यक्ति भगवान् के प्रति शरणागत होता है, वही कल्याण की अनुभूति करता है। '

श्रीमति स्मृति सिंह चौहान
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण महिलाओं की ऐसी अवस्थाओं को प्रदर्शित करता है जिसके कारण महिलाओं की स्थिति को प्रदर्शित कर सकते हैं और दयनीय स्थिति को प्रबल करने हेतु कार्य पर बल दे सकते हैं।

महिला सशक्तिकरण क्या है ? :– महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती है। जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार तथा समाज में अच्छे से रह सकती है समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण के लिए दिए गए अधिकार :–

- समान वेतन का अधिकार
- कार्यस्थल में उत्पीड़न के खिलाफ कानून
- कन्या भ्रुण हत्या के खिलाफ अधिकार
- संम्पत्ति पर अधिकार
- गरिमा और शालीनता के लिए अधिकार

आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा किए जा रहे महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम

- आर्थिक स्वतंत्रता
- कन्या शिक्षा कार्यक्रम
- एचआईवी एड्स
- जेल कार्यक्रम
- नेतृत्व संवर्धन
- सामाजिक सशक्तिकरण

शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

शिक्षा जीवन में प्रगति करने का एक शक्तिशाली उपकरण है महिलाओं के उत्थान व सशक्तिकरण के लिए शिक्षा से बेहतर तरीका क्या हो सकता है अपनी विभाग पहलुओं के माध्यम से आर्ट आफ लिविंग ने बालिकाओं और महिलाओं को स्तरीय शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण भारत के दूरस्थ कोनों में भी समान रूप से सशक्त किया है ज्ञान की इस नई शोभा ने महिलाओं को सामाजिक और शैक्षिक रूप से मजबूत किया है

सुश्री नेहा सिंह
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

नैतिक शिक्षा का महत्त्व

आचार्य विनोबा भावे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने विभिन्न धर्मों, मत–मतांतरों के साहित्य का अध्ययन किया था। बड़े–बड़े शिक्षाविद् ज्ञान का लाभ अर्जित करने उनके पास आया करते थे । विनोबाजी संस्कारों को सबसे बड़ी धरोहर मानते थे ।

एक बार महाराष्ट्र के किसी विश्वविद्यालय में उन्हें आमंत्रित किया गया। विनोबाजी वहाँ पहुँचे। उन्होंने प्राचार्य से बातचीत के दौरान पूछा, 'विश्वविद्यालय में किस किस विषय के अध्ययन की व्यवस्था है ?'

उन्हें बताया गया कि विभिन्न भाषाओं, गणित, विज्ञान तथा अन्य विषयों का अध्ययन कराया जाता है। विनोबाजी ने पूछा, 'क्या छात्रों को नैतिक शिक्षा देने की भी व्यवस्था है ?'

उन्हें बताया गया कि ऐसी व्यवस्था नहीं है ।

विनोबाजी ने पूछा, 'क्या छात्रों को केवल धनार्जन के योग्य बनाने की शिक्षा देना ही पर्याप्त है ? क्या उन्हें सच्चा मानव, सच्चा भारतीय बनाना आप आवश्यक नहीं समझते?

यदि छात्रों को अच्छे संस्कार नहीं दिए गए, उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास नहीं किया गया, तो युवा पीढ़ी अपनी प्रतिभा व शक्ति का राष्ट्र व समाज के हित में ही सदुपयोग करेगी, इसकी क्या गारंटी है ?

मेरे विचार में तो सबसे पहले बच्चों व युवक–युवतियों को आदर्श मानव बनने के अच्छे संस्कार दिए जाने चाहिए । संस्कारहीन व्यक्ति तो 'धनपिशाच' बनकर समाज को गलत दिशा में ही ले जाने का कारण बनेगा। ' विनोबाजी की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में छात्रों को नैतिक शिक्षा दी जाने लगी ।

सुश्री मनीषा साहू

"Success की सबसे खास बात है की, वो मेहनत करने वालों पर फ़िदा हो जाती है।"

श्रीमति नाबमिता माईति
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

हर व्यक्ति का महत्व

एक बार एक विद्यालय में परीक्षा चल रही थी। सभी बच्चे अपनी तरफ से पूरी तैयारी करके आये थे। कक्षा का सबसे ज्यादा पढ़ने वाला और होशियार लड़का अपने पेपर की तैयारी को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त था। उसको सभी प्रश्नों के उत्तर आते थे, लेकिन जब उसने अंतिम प्रश्न देखा तो वह चिन्तित हो गया।

सबसे अंतिम प्रश्न में पूछा गया था कि "विद्यालय में ऐसा कौन व्यक्ति है, जो हमेशा सबसे पहले आता है?, वह जो भी है, उसका नाम बताइए।"

परीक्षा दे रहे सभी बच्चों के ध्यान में एक महिला आ रही थी। वही महिला जो सबसे पहले स्कूल में आकर स्कूल की साफ सफाई करती। पतली, सावलें रंग की और लम्बे कद की उस महिला की उम्र करीब 50 वर्ष के आसपास थी।

ये चेहरा वहां परीक्षा दे रहे सभी बच्चों के आगे घूम रहा था। लेकिन उस महिला का नाम कोई नहीं जानता था। इस सवाल के जवाब के रूप में कुछ बच्चों ने उसका रंग–रूप लिखा तो कुछ ने इस सवाल को ही छोड़ दिया।

परीक्षा समाप्त हुई और सभी बच्चों ने अपने अध्यापक से सवाल किया कि "इस महिला का हमारी पढ़ाई से क्या सम्बन्ध है।"

इस सवाल का अध्यापक जी ने बहुत ही सुन्दर जवाब दिया "ये सवाल हमने इसलिए पूछा था कि आपको यह अहसास हो जाये कि आपके आसपास ऐसे कई लोग हैं, जो महत्वपूर्ण कामों में लगे हुए है और आप उन्हें जानते तक नहीं। इसका मतलब आप जागरूक नहीं है।"

शिक्षा: हमारे आसपास की हर चीज, व्यक्ति का विशेष महत्व होता है, वह खास होता है। किसी को भी नजरअंदाज नहीं करें।

सुश्री अनुपमा उमरे
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

श्रीमति सुमिता बेरा
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

मेहनत करो

है मुश्किलों सर पर खड़ा, मेहनत करो मेहनत करो
बाँधों कमर बैठे हो क्या मेहनत करो मेहनत करो

बेशक पढ़ाई है सजा और वक्त है थोड़ा
है ऐसी मुश्किल बात क्या मेहनत करो मेहनत करो

शिकवे शिकायत जो कि थी तुम ने कहे हम ने सुने
जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, मेहनत करो मेहनत करो

जो बैठे हारकर कह दो उन्हें ललकार कर
जो चाहोगे मिल जाएगा, मेहनत करो मेहनत करो

ये बीज अगर डालोगे तुम, दिल से उसे पा लोगे तुम
देखोगे फिर उसका मजा, मेहनत करो मेहनत करो

मेहनत जो कि जी तोड़कर, हर शौक से मुहँ मोड़कर
कर दोगे दम ये फैसला, मेहनत करो मेहनत करो

खेती हो या सौदागरी हो, भीख या चाकरी
सब का सबक और किस्सा सुना, मेहनत करो मेहनत करो

बचपन रहा ? किस का भला अंजाम की सोचो जरा
ये तो कहो खाओगे क्या मेहनत करो मेहनत करो

श्री प्रविन बिश्वास
सहायक प्राध्यापक (विज्ञान संकाय)

मेरी माँ

माँ धरती है , माँ ही नभ है ,
माँ ही रब है , माँ है तो सब है ,
कामो की गठरी , गठरी काधे पर लादे ,
कभी नही उफ्फ कहती है
केवल जन्म नही देती है
वह जीवन भी देती है
माँ गंगा है , माँ धाय, है माँ गाय है
माँ बच्चों की चिंताओ का एक मात्र उपाय है
माँ की ममता मे देखों कितना दम है ,
दुनिया भर की हर उमंग उसके आगे कम है
ममता की राहों मे उसको कोई बाधा झुका नही सकती है,
संतान ममता की कीमत चुका नही सकती है ,
माँ की सेवा कर लोगे जो तुम सुबह और शाम ,
घर बैठे ही मिल जाएगें तुमको चारो धाम।।

सु.श्री. सरोजनी वर्मा
सहायक प्रध्यापक वाणिज्य विभाग

गुरु का सम्मान

श्रीराम कथा की विशिष्ट काव्य शैली में रचना करनेवाले पंडित राधेश्याम कथावाचक संत–महात्माओं के सत्संग के लिए लालायित रहा करते थे। संत उड़िया बाबा, श्री हरिबाबा, आनंदमयी माँ तथा संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के प्रति वे अनन्य श्रद्धा भाव रखते थे।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी की प्रेरणा से उन्होंने महामना पंडित मदनमोहन मालवीय को अपना गुरु बनाया था। पंडित राधेश्यामजी मालवीयजी के श्रीमुख से भागवत कथा सुनकर भाव विभोर हो उठते थे।

मालवीयजी को भी राधेश्यामजी की लिखी रामायण का गायन सुनकर अनूठी तृप्ति मिलती थी । वे समय–समय पर उन्हें बरेली से काशी आमंत्रित कर उनकी कथा का आयोजन कराते थे ।

एक बार गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पंडित राधेश्यामजी ने संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के साथ काशी पहुँचकर अपने गुरु मालवीयजी को एक कीमती शॉल व मिठाइयाँ भेंट कीं।

मालवीयजी को आग्रहपूर्वक शॉल ओढ़ाया गया। यह शॉल उन्होंने विशेष रूप से गुरु दक्षिणा के लिए तैयार कराया था। कुछ समय बाद अचानक हिंदू विश्वविद्यालय के दक्षिण भारतीय संस्कृत शिक्षक मालवीयजी के दर्शन के लिए आ पहुँचे।

मालवीयजी उनके विरक्त व तपस्वी जीवन से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने शिक्षक की ओर संकेत कर राधेश्याम कथावाचक से कहा, ' इन्होंने कठोर साधना कर असंख्य छात्रों को देववाणी और धर्मशास्त्रों का अध्ययन कराया है। ऐसे तपस्वी शिक्षक हमारे आदर्श हैं।'

कहते–कहते उन्होंने वह शॉल उन्हें ओढ़ा दिया। राधेश्यामजी उनकी विरक्ति भावना और आदर्श शिक्षक के प्रति श्रद्धा देख दंग रह गए।

श्री वैभव गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (कम्प्यूटर विज्ञान)

शिक्षकों के महत्वपुर्ण संदेश

बिना गुरु के आप सिर्फ किताबें पढ़ सकते हैं ज्ञानी नहीं बन सकते, ज्ञानी बनने के लिए गुरु शरण में जाना ही पढेगा ।।

श्रीमति प्रमिला शर्मा
सहायक प्राध्यापक (विज्ञान संकाय)

गुरु को ईश्वर से भी बढकर माना गया है क्योंकि भक्ति का मार्ग और ईश्वर की साधना का ज्ञान भी उसे गुरु ने ही दिया है ।।

श्रीमति वंदना मसीह
सहायक प्राध्यापक (कला संकाय)

अंतिम उंचाई

कितना स्पष्ट होता आगे बढ़ते जाने का मतलब
अगर दसों दिशाएँ हमारे सामने होतीं ।
हमारे चारों ओर नहीं।
कितना आसान होता चलते चले जाना
यदि केवल हम चलते होते
बाकी सब रुका होता।
मैंने अक्सर इस ऊलजलूल दुनिया को
दस सिरों से सोचने और बीस हाथों से पाने की कोशिश में
अपने लिए बेहद मुश्किल बना लिया है।
शुरू–शुरू में सब यही चाहते हैं
कि सब कुछ शुरू से शुरू हो,
लेकिन अंत तक पहुँचते–पहुँचते हिम्मत हार जाते हैं।
हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती
कि वह सब कैसे समाप्त होता है
जो इतनी धूमधाम से शुरू हुआ था
हमारे चाहने पर।
दुर्गम वनों और ऊँचे पर्वतों को जीतते हुए
जब तुम अंतिम ऊँचाई को भी जीत लोगे
जब तुम्हें लगेगा कि कोई अंतर नहीं बचा अब
तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में
जिन्हें तुमने जीता है
जब तुम अपने मस्तक पर बर्फ का पहला तूफान झेलोगे
और काँपोगे नहीं
तब तुम पाओगे कि कोई फर्कनहीं
सब कुछ जीत लेने में
और अंत तक हिम्मत न हारने में।

श्री रूपेन्द्रकुमार साहू
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग)

पुस्तकालय के महत्व एवं कार्य

1. **बौद्धिक कार्य विधि (Intellectual function)–** पुस्तकालय विद्यार्थियों एवं तर्क अध्यापकों के लिए बौद्धिक भोजन प्रदान करता है। यह विचार प्रक्रिया, कल्पना, एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहन देता है। यह उनकी ज्ञान–पिपासा शान्त करता है, उनका मानसिक क्षितिज विस्तृत करता है, उनकी सामान्य सूचनाओं में वृद्धि करता है, उन्हें शिक्षित करता है और उनमें और जानने की जिज्ञासा जगाता है। पुस्तकालय एक अच्छे स्कूल का स्नायु–केन्द्र (Nerve Centre) और उसके शैक्षिणिक जीवन का केन्द्र–चक्र है।

2. **पढ़ने की आदत (Reading habit)–** पुस्तकालय पढ़ने की उचित आदत के निर्माण में सहायता प्रदान करता है। यह पढ़ने में रुचि जाग्रत करता है और स्वतंत्र अध्ययन की आदत का निर्माण करता है। ज्ञान के व्यापक भण्डार को सामने देखकर ज्यादा पढ़ने की इच्छा को प्रोत्साहन मिलता है।

3. **रचनात्मक कार्य–** पुस्तकालय रचनात्मक कार्यों में भी सहायता प्रदान करता है। यह पाठकों को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित करता है। पुस्तकालय द्वारा विद्यार्थी सूचनाएं एकत्रित करने के लिए प्रेरित हो उठते हैं और वे इन सूचनाओं का अपनी मौलिक रचनाओं में उपयोग करते हैं। स्वतंत्र अध्ययन से वे विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक योगदान करने की योग्यता प्राप्त करते हैं। पुस्तकालय से प्राप्त विविध पुस्तकें प्रेरणा का महान साधन है और नये दृष्टिकोणों, नये विचारों तथा जीवन के प्रति नवीन उत्साह जगाने में सहायता करती है।

4. **भावात्मक कार्य (Linguitic function)–** पुस्तकालय से पाठकों की भाषात्मक योग्यताएं सशक्त बनती हैं। विविध पुस्तकों के अध्ययन से उन्हें नये शब्दों का ज्ञान होता है जो उन्हें पाठ्य–पुस्तकों तथा सन्दर्भ पुस्तकों को उचित रूप से समझने की योग्यता प्रदान करता है।

5. **मनोरंजन कार्य (Recreational function)–** पुस्तकालय विद्यार्थियों को मनोरंजन प्रदान करता है और उन्हें कक्षा के उबाऊ वात. ावरण से मुक्ति दिलाता है। पुस्तकालय केवल परीक्षाओं के लिए नहीं बल्कि मनोरंजन के लिए भी अध्ययन रुचि को विकसित करता है। यह विद्यार्थियों को अवकाश काल के उपयोगी एवं आनन्दपूर्ण यापन के लिए स्वस्थ्य वातावरण प्रदान करता है। एक कवि ने कितना सुन्दर लिखा है–

"Books are keys to wisdom's pleasure;
Books are gates to lands of pleasure;
Books are paths that upward lead:
Books are fiends, come, let us read."

'इसका अर्थ है कि पुस्तके मित्र हैं, विवेकी निधि है, हमें आनन्द देती हैं और हमें ऊँचा उठाती हैं। पुस्तकालय किशोरों की शक्ति को उपयोगी दिशाओं की ओर ले जाता है और उन्हें गप्पे लगाने, आवारागर्दी करने, ताश खेलने जैसी बुरी आदतों से बचाता है।

6. **पूरक कार्य (Supplementary function)–** पुस्तकालय अध्ययन कक्षा के कार्य को पूर्ण करता है। शिक्षण की सभी प्रगतिशील विधियां पुस्तकालय द्वारा आत्म–अध्ययन एवं निरीक्षित अध्ययन (Supervised Shudy) पर आधारित है।'प्रगतिशील शिक्षण विधियों को क्रियान्वित करने के लिए पुस्तकालय को एक अनिवार्य साधन समझना चाहिए।"

"The library may well be regarded as an essential instrument of pulting progressive methods into practice-

विद्यार्थी दत्त–कर्य (Assignment) को सन्दर्भ पुस्तकों, स्रोत पुस्तकों (Source Books) तथा अन्य उच्च स्तरीय पुस्तकों से प्राप्त सामग्री की सहायता से पूरा करते हैं।

7. **सांस्कृतिक कार्य (Cultural function)–** पुस्तकालय सांस्कृतिक परम्पराओं संरक्षण का महान साधन है। (A library is a great source for the preservation and tradition of culture.) इतिहास साक्षी है कि ज्ञान पुस्तकों के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी महान विद्वानों, दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के विचार समस्त संसार में जाने जाते हैं।

8. **अनुदेशनात्मक कार्य (Instrumental function)–** पुस्तकालय अध्यापकों को विभिन्न स्कूल विषयों से सम्बन्धित विविध प्रकार की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तक प्रदान करके उनके अनुदेशनात्मक कार्य को सुविधाजनक बनाता है।

श्री गुलशन कुमार गेंदलें
ग्रंथालयाध्यक्ष

गुरु का सम्मान

श्रीराम कथा की विशिष्ट काव्य शैली में रचना करनेवाले पंडित राधेश्याम कथावाचक संत–महात्माओं के सत्संग के लिए लालायित रहा करते थे। संत उड़िया बाबा, श्री हरिबाबा, आनंदमयी माँ तथा संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के प्रति वे अनन्य श्रद्धा भाव रखते थे।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी की प्रेरणा से उन्होंने महामना पंडित मदनमोहन मालवीय को अपना गुरु बनाया था। पंडित राधेश्यामजी मालवीयजी के श्रीमुख से भागवत कथा सुनकर भाव विभोर हो उठते थे।

मालवीयजी को भी राधेश्यामजी की लिखी रामायण का गायन सुनकर अनूठी तृप्ति मिलती थी । वे समय–समय पर उन्हें बरेली से काशी आमंत्रित कर उनकी कथा का आयोजन कराते थे ।

एक बार गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पंडित राधेश्यामजी ने संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के साथ काशी पहुँचकर अपने गुरु मालवीयजी को एक कीमती शॉल व मिठाइयाँ भेंट कीं।

मालवीयजी को आग्रहपूर्वक शॉल ओढ़ाया गया। यह शॉल उन्होंने विशेष रूप से गुरु दक्षिणा के लिए तैयार कराया था। कुछ समय बाद अचानक हिंदू विश्वविद्यालय के दक्षिण भारतीय संस्कृत शिक्षक मालवीयजी के दर्शन के लिए आ पहुँचे।

मालवीयजी उनके विरक्त व तपस्वी जीवन से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने शिक्षक की ओर संकेत कर राधेश्याम कथावाचक से कहा, ' इन्होंने कठोर साधना कर असंख्य छात्रों को देववाणी और धर्मशास्त्रों का अध्ययन कराया है। ऐसे तपस्वी शिक्षक हमारे आदर्श हैं।'

कहते–कहते उन्होंने वह शॉल उन्हें ओढ़ा दिया। राधेश्यामजी उनकी विरक्ति भावनाऔर आदर्श शिक्षक के प्रति श्रद्धा देख दंग रह गए।

श्री राकेश कुमार बद्येल
सहा. प्राध्या. कम्प्यूटर विज्ञान

इंसान की कीमत

एक बार लोहे की दुकान में अपने पिता के साथ काम कर रहे एक बालक ने अचानक ही अपने पिता से पुछा – "पिताजी इस दुनिया में मनुष्य की क्या कीमत होती है?"
पिताजी एक छोटे से बच्चे से ऐसा गंभीर सवाल सुन कर हैरान रह गये। फिर वे बोले– बेटे एक मनुष्य की कीमत आंकना बहुत मुश्किल है, वो तो अनमोल है।"
बालक – क्या सभी उतने ही कीमती और महत्त्वपूर्ण हैं ?
पिताजी – हाँ बेटे।
बालक के कुछ पल्ले पड़ा नहीं, उसने फिर सवाल किया – तो फिर इस दुनिया मे कोई गरीब तो कोई अमीर क्यो है? किसी की कम इज्जत तो किसी की ज्यादा क्यो होती है?
सवाल सुनकर पिताजी कुछ देर तक शांत रहे और फिर बालक से स्टोर रूम में पड़ा एक लोहे का रॉड लाने को कहा।
रॉड लाते ही पिताजी ने पुछा – इसकी क्या कीमत होगी?
बालक– लगभग 300 रूपये।

पिताजी –अगर मै इसके बहुत से छोटे–छोटे कील बना दू, तो इसकी कीमत क्या हो जायेगी ?

बालक कुछ देर सोच कर बोला – तब तो ये और महंगा बिकेगा लगभग 1000 रूपये का।
पिताजी – अगर मै इस लोहे से घड़ी के बहुत सारे स्प्रिंग बना दूँ तो?

बालक कुछ देर सोचता रहा और फिर एकदम से उत्साहित होकर बोला " तब तो इसकी कीमत बहुत ज्यादा हो जायेगी।"

पिताजी उसे समझाते हुए बोले –"ठीक इसी तरह मनुष्य की कीमत इसमे नही है की अभी वो क्या है, बल्कि इसमे है कि वो अपने आप को क्या बना सकता है।"

बालक अपने पिता की बात समझ चुका था।

श्री मोरध्वज जायसवाल
मुख्य लिपिक

मनुष्य को फल की इच्छा किए बगैर कर्म करने चाहिए

इंसान की सफलता में भाग्य उसका साथी है, लेकिन भाग्य ही सब कुछ नहीं होता, बल्कि इंसान के कर्म ही भाग्य की रचना करते हैं, इसलिए हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए, तभी भाग्य का साथ मिलता है। कर्म और भाग्य दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं। कर्म किए बगैर भाग्य नहीं फलता और भाग्य के बगैर कर्म की कोई गति नहीं है। यदि मनुष्य के कर्म अच्छे हैं, तो भाग्य उससे विमुख नहीं हो सकता।

इसके विपरीत भाग्य बलवान है और कर्म अनुकूल नहीं है, तो भाग्य भी उसका अधिक साथ नहीं देता। मेरे अनुसार कुछ लोग कहते हैं कि जब भाग्य ही सब कुछ है, तो मेहनत करना बेकार है। वहीं अगर भाग्य में ये लिखा हो कि कोशिश करने पर ही मिलेगा, तब क्या करोगे? सिर्फ भाग्य के भरोसे बैठे रहने वालों को कुछ नहीं मिलता, बल्कि जो कर्म करते हैं, भाग्य उनका साथ देता ही है, साथ ही वे अपने पुरुषार्थ की वजह से कई गुना लाभ प्राप्त करते हैं। किसी का भाग्य कमजोर भी हो, तो व्यक्ति उसे अपने पुरुषार्थ से पूरी तरह बदल सकता है। महाभारत में श्रीकृष्ण ने भी सिर्फ कर्म करने को प्रधानता दी। वे कहते हैं कि मनुष्य को फल की इच्छा किए बगैर कर्म करने चाहिए। कर्मवीर ही हर जगह और हर काल में फूलते–फलते हैं। उनमें ऐसे गुण होते हैं कि एक ही क्षण में उनका बुरा समय भी अच्छा बन जाता है। उनके सामने कैसा भी संकट आ जाए, वे बिल्कुल नहीं घबराते हैं। वे परेशान होकर किसी काम को छोड़ते नहीं, बल्कि अपनी असफलताओं का आकलन करके वे पुनः प्रयास शुरू कर देते हैं, जिसकी वजह से उन्हें सफलता मिलती है।

संत तुलसीदास का कहना था कि इस संसार में सभी कुछ है जिसे हम पाना चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन कर्महीन व्यक्ति इच्छित चीजों को पाने से वंचित रह जाते हैं। कर्म का परिवार और गोत्र इत्यादि से भी कुछ लेना–देना नहीं है। महाभारत में कर्ण ने कहा कि कौन से कुल में जन्म लेना यह भाग्य के हाथ में है, लेकिन पराक्रम करना मेरे हाथ में है। सच्चाई ये ही है कि ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है, जो स्वयं की मदद करते हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि मेरे दाएं हाथ में कर्म है और बाएं हाथ में जय। इसलिए जब किसी मनुष्य को ये लगे कि उसका भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा है, तो उसे ये सवाल अपने आपसे पूछना चाहिए कि क्या ये दुर्लभ मनुष्य योनि उसे उसी भाग्य की बदौलत नहीं मिली है?

श्री भुपेन्द्र यादव
कम्प्यूटर ऑपरेटर

श्री गौकरण यादव
कम्प्यूटर ऑपरेटर

कम्प्यूटर

ढूँढ लिया एक साथी हमने,
खोज लिया एक यार
बहुत ही प्यारा सबसे न्यारा
वह हैं बड़ा होशियार
हर सवाल का हल बतलाता
मुश्किल सारी वह सुलझाता
काम कहें जो भी करने को हैं झटपट तैयार
जान लिया क्या आप सभी ने
उसी मित्र का नाम माउस क्लिक करते ही
करता कम्प्यूटर अपना काम

लता साहू

प्रकृति

देखों प्रकृति बनी हैं दानी
देती हमकों शुद्ध हवा और पानी
नदी हैं कल–कल कर बहती
पानी की यह ताल दिवानी
झरना हैं झर झर गिरता
प्रकृति की रूप सुहानी
सुनती हो पकृति रानी
तेरी छवि तो सदियों पुरानी
इसी में गंगा इसी में यमुना
इसी में आठों याम लुभावनी
लोभित जिस पर जग सारा
अनगिनत तेरी कहानी

सुषमा दुबें
साहा प्राध्या. कम्प्यूटर विज्ञान

सपने बुनना सीख लो।।

बैठ जाओ सपनों के नाव में मौके की ना तलाश करो।
सपने बुनना सीख लो।।
खुद ही थाम लो हाथों में पतवार माझी का ना इंतजार करो।
सपने बुनना सीख लो।।
पलट सकती है नाव की तकदीर गोते खाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
अब नदी के साथ बहना सीख लो डुबना नहीं तैरना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
भंवर में फंसी सपनों की नाव अब पतवार चलाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
खुद ही राह बनाना सीख लो अपने दम पर कुछ करना सीख लो ।
सपने बुनना सीख लो।।
तेज नहीं तो धीरे चलना सीख लो भय के भ्रम से लड़ना सीख लो सपने बोलना सीख लो।।

सेफाली शुक्ला
साहा प्राध्या. कम्प्यूटर विज्ञान

एक मेंढकों की टोली जंगल के रास्ते से जा रही थी. अचानक दो मेंढक एक गहरे गड्ढे में गिर गये. जब दूसरे मेंढकों ने देखा कि गढ्ढा बहुत गहरा है तो ऊपर खड़े सभी मेढक चिल्लाने लगे 'तुम दोनों इस गढ्ढे से नहीं निकल सकते, गढ्ढा बहुत गहरा है, तुम दोनों इसमें से निकलने की उम्मीद छोड़ दो.

उन दोनों मेढकों ने शायद ऊपर खड़े मेंढकों की बात नहीं सुनी और गड्ढे से निकलने की लिए लगातार वो उछलते रहे. बाहर खड़े मेंढक लगातार कहते रहे ' तुम दोनों बेकार में मेहनत कर रहे हो, तुम्हें हार मान लेनी चाहियें, तुम दोनों को हार मान लेनी चाहियें. तुम नहीं निकल सकते.

गड्ढे में गिरे दोनों मेढकों में से एक मेंढक ने ऊपर खड़े मेंढकों की बात सुन ली, और उछलना छोड़ कर वो निराश होकर एक कोने में बैठ गया. दूसरे मेंढक ने प्रयास जारी रखा, वो उछलता रहा जितना वो उछल सकता था.

बहार खड़े सभी मेंढक लगातार कह रहे थे कि तुम्हें हार मान लेनी चाहियें पर वो मेंढक शायद उनकी बात नहीं सुन पा रहा था और उछलता रहा और काफी कोशिशों के बाद वो बाहर आ गया. दूसरे मेंढकों ने कहा 'क्या तुमने हमारी बात नहीं सुनी.

उस मेंढक ने इशारा करके बताया की वो उनकी बात नहीं सुन सकता क्योंकि वो बेहरा है सुन नहीं सकता, इसलिए वो किसी की भी बात नहीं सुन पाया. वो तो यह सोच रहा था कि सभी उसका उत्साह बढ़ा रहे हैं.

ओमप्रकाश साहू

कहानी से सीख | Learning From The Story

1. जब भी हम बोलते हैं उनका प्रभाव लोगों पर पड़ता है, इसलिए हमेशा सकारात्मक बोलें.
2. लोग चाहें जो भी कहें आप अपने आप पर पूरा विश्वाश रखें और सकरात्मक सोचें.

बुरे की पहचान

एक राजा को जब पता चला मेरे राज्य में एक ऐसा व्यक्ति है, जिसका सुबह–सुबह मुख देखने से दिन भर भोजन नही मिलता है। सच्चाई जानने की इच्छा से उस व्यक्ति को राजा ने अपने साथ सुलाया, दुसरे दिन राजा की व्यस्तता ऐसी बढ़ी की राजा शाम तक भोजन नही कर पाया, बात से क्रोधित होकर राजा ने उसे तत्काल फाँसी का दण्ड देने का ऐलान कर दिया। आखिरी इच्छा के अंर्तगत उस व्यक्ति ने कहा– "राजन मेरा मुहँ देखने से आपको शाम तक भोजन नही मिला किन्तु आपका मुहँ देखने से मुझे मौत मिलने वाली है"।

इतना सुनते ही लज्जित राजा को संत वाणी याद आ गई।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो मन खोजा आपणा, मुझ से बुरा न कोय।

ओजस्विता साहू
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

मानसी बंजारे
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

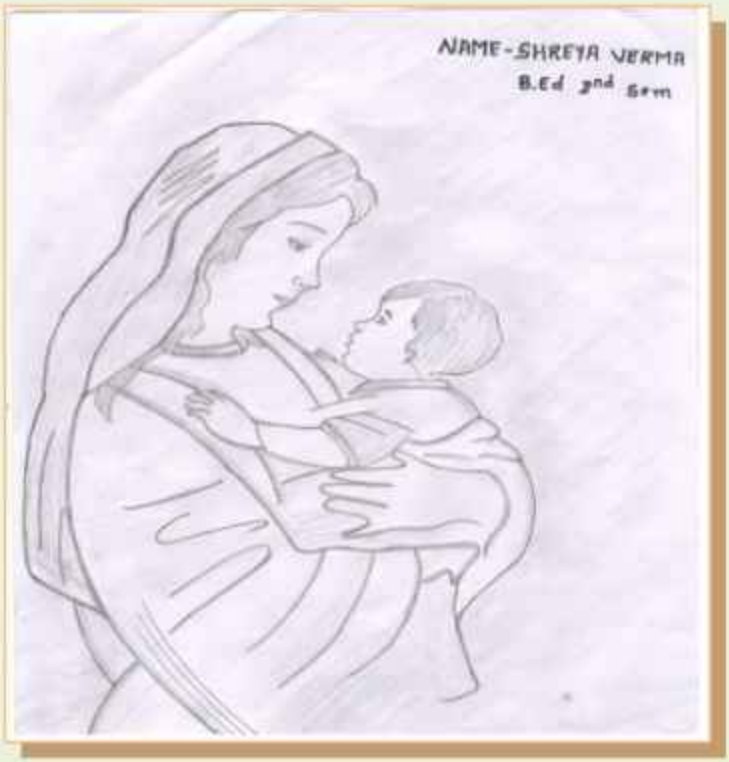

सबसे बड़ा दहेज

जब लड़का शादी करके अपने घर पहुचां तो सबने पूछा क्या मिला हैं दहेज में?

कुछ देर तो चुप रहा, फिर जब उसने अपनी दुल्हन की रोने की आहट हुयी तो उससे रहा नही गया।

लड़का बोला आज मैं दुनिया का अमीर आदमी बन गया हुँ।

एक बाप ने मुझे अपनी जान से भी प्यारी बेटी दे दी हैं, एक भाई ने अपनी हमजोली दे दी, एक बहन ने अपनी परछाई दे दी, और तो और एक माँ जो दुनियाँ को सबकुछ दे सकती हैं पर संतान नही दे सकती , उस माँ ने अपने ऑचल में खेली गुड़िया दे दी और क्या चाहिए मुझें। ऐसी सोच रखने वाले लड़कों को मेरा दिल से सैल्युट हैं। आज के युवाओं में यह सोच होना जरूरी हैं।

एक बाप ने अपने दिल का सबसे कीमती टुकड़ा दे देता हैं और लोग कहते हैं शादी में दिया ही क्या हैं?

सीमा वर्मा
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

.....बुध्द की महत्वपूर्ण प्रेरणा.....

भगवान बुध्द की जीवन मे एक घटना हुई,वे अपने चचेरे भाई देवदत्त के साथ बगीचे में घुम रहे थे, इन्हें एक हंस उड़ता दिखा, तभी देवदत्त ने एक ही बाण से निशाना साधा और हंस को

.लहुलुहान कर दिया और जमीन मे आ गिरा, बुध्द ने दौड़कर हंस को उठा लिया, बाण निकालकर उसकी मरहम पट्टी की बुध्द घायल हंस की सेवा कर रहे थे, देवदत्त आया और हंस पर अपना अधिकार जमाने लगा। बुध्द के मना कर देने पर विवाद हुआ और दोनो राजा शुध्दोधन के पास पहुँचे। उन्होनें दोनो की बातें सुनी और निर्णय दिया प्राण लेनेवाले से प्राण बचाने वाला बड़ा होता है । इसलिए हंस पर बुध्द का ही अधिकार है। मानव–समाज को शांति की ओर बढ़ना पड़ेगा व्यर्थ के तर्को से बाहर निकलने में ही भलाई है।

प्रेरणा:– जब तक मन में स्वार्थ है, तब तक मानव सुखी नही हो सकता।

मसित पाल
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

लघु कथा
संघर्ष की कहानी

नदी के किनारे मटके और नदी की मिट्टी के बीच बातचीत होती हैं, जिसमें मिट्टी मटके से बोलती हैं की, "मैं भी मिट्टी तुम भी मिट्टी" परन्तु पानी मुझे बहा कर ले जाती हैं , और तुम पानी को समाहित कर लेते हों। "तब मटका बोलता हैं तुमने ठीक कहा , "मैं भी मिट्टी और तुम भी मिट्टी" परन्तु पानी मुझमें समाहित होती हैं इसके पीछें मेरी संघर्ष का यह नतीजा हैं क्योकि मै भी पहले मिट्टी थी उसके बाद मुझे पानी में भिगोया , सड़ाया कुम्हार की थाप ,आग में पकाया गया तब जाके मुझमें पानी को समाहित करने की शक्ति आई।

इस कहानी से हमें ये सीख मिलती हैं की किसी कार्य को पाने के पीछे संघर्ष करना आवश्यक हैं।

रेणुका ध्रुव
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

आज का विचार

आप एक पत्थर लीजिए और उसे कुत्ते को मारिये आप देखेंगे की कुत्ता डरकर भाग जायेगा।
अब फिर वही पत्थर लीजिए और उसे मधुमक्खी के छत्तें पर दे मारियें , फिर देखिएगा की आपका क्या हाल करती हैं मधुमक्खियाँ ?
पत्थर वही हैं और आप भी वही हैं बस फर्क इतना सा हैं कि कुत्ता अकेला था और मधुमक्खियाँ समूह में।
एकजुटता , एकता में ही शक्ति हैं, अगर हम एकजुट नही हुए तो ना तो हमारा देश बदलेगा , और ना ही हमारा अपना समाज , और ना हम ...।

आकाशदीप
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

"मुसीबतो से भागना नयी मुसीबतों को निमंत्रण देने के समान है जीवन मे समय–समय पर चुनौतियों एवं मुसीबतो का सामना करना पड़ता है,एवं यही जीवन का सत्य है एक शांत समुद्र मे नाविक कभी भी कुशल नही बन पाता है।

"पानी को बर्फ मे बदलने मे वक्त लगता है,
ढ़ले हुए सूरज को निकलने मे वक्त लगता है,
थोड़ी धीरज रख, थोड़ा और जोर लगाता रह,
किस्मत के जंग लगे दरवाजे को खुलने मे वक्त लगता है"।

हेमसिंह ठाकुर
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

अगर आप पढ़ाई नही कर पा रहें तो

"एक राजा के पास हाथी था जो बहुत शक्तिशाली, आज्ञाकारी, पराक्रमी था, इसी वजह से वह हाथी राजा को बहुत प्रिय था, राजा जब भी युध्द में जाता अपने प्रिय हाथी को ही साथ मे ले के जाता था, धीरे–धीरे समय बीतता गया और हाथी की आयु बढ़ती गई तो राजा अपने प्रिय हाथी को युध्द मे नही लिए जाया करता था,और सोचने लगा ये हाथी शक्तिहीन हो गया है।

एक दिन हाथी जंगल मे गया, और महल वापस आते समय दलदल मे फस गया बहुत कोशिश करने के बाद भी नही निकल पाया तभी रास्तें से महात्मा बुध्द जा रहे थे तो उसने हाथी को निकालने का सुझाव दिया और बोला हाथी के चारो ओर युध्द जैसा माहौल बना दो तो राजा आस–पास नगाड़े बजाने लगे शहनाई बनी पुरा युध्द का माहौल बना दिया तो वह हाथी जो बहुत पराक्रमी था, उसे लगा युध्द होने वाला है,तो वह हाथी उस दलदल से अपने पुरे ताकत और अपनी स्फुर्ति से जो वो युध्द में दिखाता था। उसी के साथ वह उस दलदल से खुद ही नि. कल गया और जोर से चिघांड़ने लगा।

(हमे पढ़ाई करने के लिए आसपास वैसा माहौल बनाना पड़ता है, हम उम्र के किसी भी स्टेज पे अच्छे से पढ़ाई कर सकतें है। बस अपने अन्दर की पॉवर को जानना है।)

सागर
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

"सूविचार"

किसी के कहने से यदि "अच्छा या बुरा" होने लगे तो
यह संसार या तो "स्वर्ग बन जाए या पुरी तरह से "नर्क
इसलिए यह ध्यान मत हो कि कौन क्या कहता हैं बस वो करो जो "अच्छा और सच्चा"हैं

ईस्टलाइट बघेल
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

"छत्तीसगढ़ के जिले का नाम कविता में"

जब सर मोला दंतेवाड़ा लेगिस,उहां
बासु धम ले जामुन के बीजा ल उगावत रहिस।
त बिलासपुर ले रेंगत गरियाबंद गेन,
तब सूरज के कहॉ ले शक्ति रहिस।।
कांसा बर्तन में कोन कोरि कोर पेंड़ा खैं,
ऐही बेरा बकरा दुबरा गिस।।

ज–जशपुर , ब– बस्तर , सर–सरगुजा, मोला–मोहला–मानपुर , दंतेवाड़ा–दंतेवाड़ा, बा– बालोद, सु–सुकमा , ध– धमतरी , म– मनेन्द्रगढ , जां– जांजगीर–चांपा , मु– मुंगेली , न– नारायणपुर , बीजा– बीजापुर , बिलासपुर– बिलासपुर , गरियाबंद – गरियाबंद , सुरज–सुरजपुर , शक्ति– शक्ति , कां – कांकेर सा–सारंगगढ , बिलाईगढ , म–महासमुंद, कोन–कोंडागांव ,कोर– कोरिया , कोर–कोरबा, पेंड़ा –पेंड़ा–मरवाही–गौरेला , खैं–खैरागढ–छुईखदान–गंडई , बे–बेमेतरा, रा–रायपुर , ब–बलरामपुर क–कवर्धा, रा–रायगढ ,दु–दुर्ग , ब–बलौदाबाजार–भाटापारा, रा– राजनांदगांव।

राकेश कुमार डहरिया
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

"सूविचार"

अपने हाथों की लकीरों को देखकर क्यों रोते हों मेरे दोस्त।
नसीब तो उनके भी होते हैं जिनके हाथ ही नही होते हैं।।

रोहित कुमार
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

एक मेंढकों की टोली जंगल के रास्ते से जा रही थी, अचानक दो मेंढक एक गहरे गड्ढे में गिर गये, जब दूसरे मेंढकों ने देखा कि गढ्ढा बहुत गहरा है तो ऊपर खड़े सभी मेढक चिल्लाने लगे 'तुम दोनों इस गढ्ढे से नहीं निकल सकते, गढ्ढा बहुत गहरा है, तुम दोनों इसमें से निकलने की उम्मीद छोड़ दो.

उन दोनों मेढकों ने शायद ऊपर खड़े मेंढकों की बात नहीं सुनी और गड्ढे से निकलने की लिए लगातार वो उछलते रहे. बाहर खड़े मेंढक लगातार कहते रहे ' तुम दोनों बेकार में मेहनत कर रहे हो, तुम्हें हार मान लेनी चाहियें, तुम दोनों को हार मान लेनी चाहियें, तुम नहीं निकल सकते.

गड्ढे में गिरे दोनों मेढकों में से एक मेंढक ने ऊपर खड़े मेंढकों की बात सुन ली, और उछलना छोड़ कर वो निराश होकर एक कोने में बैठ गया, दूसरे मेंढक ने प्रयास जारी रखा, वो उछलता रहा जितना वो उछल सकता था.

बहार खड़े सभी मेंढक लगातार कह रहे थे कि तुम्हें हार मान लेनी चाहियें पर वो मेंढक शायद उनकी बात नहीं सुन पा रहा था और उछलता रहा और काफी कोशिशों के बाद वो बाहर आ गया. दूसरे मेंढकों ने कहा 'क्या तुमने हमारी बात नहीं सुनी.

उस मेंढक ने इशारा करके बताया की वो उनकी बात नहीं सुन सकता क्योंकि वो बेहरा है सुन नहीं सकता, इसलिए वो किसी की भी बात नहीं सुन पाया, वो तो यह सोच रहा था कि सभी उसका उत्साह बढ़ा रहे हैं.

कहानी से सीख | Learning From The Story

1. जब भी हम बोलते हैं उनका प्रभाव लोगों पर पड़ता है, इसलिए हमेशा सकारात्मक बोलें.
2. लोग चाहें जो भी कहें आप अपने आप पर पूरा विश्वाश रखें और सकरात्मक सोचें.

प्रेरणदायक गीत

हर एक संकट का हल होगा,
वह आज नहीं तो कल होगा।
माना की है अंधेरा बहुत और चारों और नाकामी है
माना कि थक पर टूट रहे और सफर अभी दूरगामी हैं।
पर श्रीकृष्ण ने साफ कहा है बस कर्म तुम्हारा कल होगा
और कर्म में अगर सच्चाई है तो कर्म कहां निष्फल होगा
हर एक संकट का हल होगा , वो आज नहीं तो कल होगा
लोहा जितने तपता है उतनी ही ताकत भरता है
सोने को जितनी आग लगे वह उतना प्रखर निखरता है
हीरे पर जितनी धार लगे वह उतना खूब चमकता है
सूरज जैसा बनना है तो रो सूरज जितना जलना होगा
नदियों सा आदर पाना है तो पर्वत छोड़ निकलना होगा
हर एक संकट का हल होगा । वो आज नहीं तो कल होगा

आकाश दुबें
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

लघु कथा

एक चुटकी ईमानदारी

एक संत ने ग्रामीणों को खाने पर आमंत्रित किया । अचानक याद आया कि रसोई में नमक तो सुबह ही खत्म हो गया। संत शिष्य से बोले–जरा बाजार से एक पुड़िया नमक लेता आ। ये ध्यान रखना कि नमक सही दाम पे खरीदना, न अधिक पैसे देना और ना कम। शिष्य ने पूछा– अगर कुछ मोलभाव करके मैं कम पैसे में नमक लाता हूं और चार पैसे बचाता है इसमें हर्ज ही क्या है ? संत बोले– ऐसा करना हमारे गांव को बर्बाद कर सकता है । सभी संत की बात सुन रहे थे एक बोला महाराज कम दाम पर क्यों बेचेगा ? तभी न जब उसे पैसों की सख्त जरूरत हो और जो कोई भी उसकी स्थिति का फायदा उठाता है वह मजदूर का अपमान करता है जिसमें कड़ी मेहनत से नमक बनाया होगा ।शुरू में समाज के अंदर कोई बेईमानी नहीं थी लेकिन धीरे–धीरे हम लोग एक–एक चुटकी बेईमानी डालते गये और सोचा कि इतने से क्या होगा लेकिन खुद ही देख लो हम कहां पहुंच गए हैं आज हम एक चुटकी इमानदारी के लिए तरस रहे हैं

स्मृति महिलांगे
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

मॉरिस गुडमैन

यह कहानी मॉरिस गुडमैन की है जो कि लेखक और अंतर्राष्ट्रीय वक्ता है

यह कहानी 10 मार्च 1981 को शुरू होती है इस दिन मेरी जिंदगी सचमुच बदल गई मैं इस दिन को कभी नहीं भूल पाऊंगा । मेरा हवाई जहाज टकरा गया मेरा शरीर पूरी तरह से अपंग हो गया। मेरी स्पाइनल कार्ड पूरी तरह टूट गई थी मैं खा नहीं सकता था , बोल नहीं सकता था, सांस नहीं ले सकता था , मैं बस अपनी पलकें झपक सकता था , डॉक्टर ने कहा मैं कभी खुद से चल नहीं पाऊंगा। डॉक्टर ने यह बात कही थी मैंने यह नहीं सोचा था मैंने दोबारा स्वस्थ शरीर की कल्पना की और खुद को क्रिसमस के दिन अस्पताल से खुद चलकर बाहर जाते देखा और यह सच हुआ। मैं क्रिसमस के दिन स्वस्थ होकर अस्पताल से बाहर निकला ।

"जैसा आप विचार करते हैं वैसा बन जाते हैं "

"प्रत्येक विचार एक वस्तु है
जैसा विचार वैसा जीवन"

सुषमा पाल
कक्षा– बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

लघु कथा

एक पक्षी फल खाए.

दूसरा उसे फल खाता देख प्रसन्न हो तो यह प्रेम है मित्रता है और सख्य है।

ऋग्वेद के पहले मंडल में 2 पक्षियों की कथा है संपूर्ण पक्षी दोनों एक ही डाल पर बैठे हैं एक अमृत फल खाता है दूसरा उसे फल खाते देखता है और प्रसन्न होता हैं जिसकी तृप्ति पहले पक्षी को फल खाने से मिल रही है उतनी ही तृप्ति दूसरे को उसी फल खाते देखने में मिल रही है दोनों के पास तृप्ति है।

एक के पास खाने की तृप्ति दूसरे के पास पहले को खाते देखने की तृप्ति। इसे सुपर्णा संयुजा सखायौं कहा गया है

यही संख्य भाव है, यानी मित्रता का भाव यही जीवन का सख्य है यही प्रेम का संख्या है यही साहित्य में लेखन पाठक का सत्य है पहले तृप्ति दूसरे के लिए आनंद का कारण बन जाए

कविता मारकण्डें
कक्षा–बी.एड तृतीय सेमेस्टर सत्र–2021–23

"आजादी का अमृत *महोत्सव*"

आजादी का अमृत *महोत्सव*
हम सबको मिलकर मनाना है,

जन–जन की भागीदारी से
आत्मनिर्भर भारत बनाना है।

आजादी की वीरगाथा को
जन–जन तक पहुचांना है,

अनगिनत थे देश मे मिटने वाले,
आखिर कितनो को हमने जाना हैं।

खोए बैठे जो कही अतीत में
अब सामने उनको लाना है,

लहू तो उनका भी बहा था .....
ठाना उन्होनें भी था कि
देश को आजाद कराना है

किस्सा उनकी वीरता का
देश के हर बच्चे हर युवा को बतलाना है,

75 सालो की उपलब्धियों को
दुनिया को बतलाना है।

तृप्ति वर्मा
कक्षा– बीएड तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–2023

स्पर्श

जब तक चलेगी जिंदगी की सांसे,
कही प्यार कही टकराव मिलेगा ।
कही बनेंगें संबंध अंर्तमन से तो,
कही आत्मीयता का अभाव मिलेगा,
कही मिलेगी जिंदगी मे प्रंशसा तो,
कही नाराजगियों का बहाव मिलेगा।
कही मिलेगी सच्ची मन से दुआ तो,
कही भावनाओं मे दुर्भाव मिलेगा।
की बनेगें पराए रिश्ते भी अपने तो,
कही अपनो से ही खिचांव मिलेगा।
कही होगी खुशामदे चेहरे पर तो,
कहीं पीठ पे बुराई का घाव मिलेगा।
तू चला चल राही अपने कर्मपथ पे,
जैसा तेरा भाव वैसा तेरा प्रभाव मिलेगा।
रख स्वभाव मे शुध्दता का स्पर्श तू,
अवश्य जिंदगीं का पड़ाव मिलेगा।

अनामिका वर्मा
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
(2021–23)

घायल हिन्दुस्तान

मुझको है विश्वास किसी दिन
घायल हिन्दुस्तान उठेगा।
दबी हुई दुबकी बैठी है,
कलखकारी चार दिशाएं
ठगी हुई ठिठकी सी लगती
नभ की चिर गतिमान हवाएं
अंबर के आनन के ऊपर
एक मुर्दनी सी छाई है,
एक उदासी में डुबी है।
तृण तरूवर पल्लव – वतिकाएं
आँधी के पहले देखा है
कभी प्रकृति का निश्चल चेहरा ?
इस निश्चलता के अंदर से
ही भीषण तूफान उठेगा।
मुझकों है विश्वास किसी दिन
घायल हिन्दुस्तान उठेगा ।

हरिकृष्ण पैकरा
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर
(2021–23)

आज की नारी

मैं हुँ आज की नारी
पूर्ण रूप से करने में हुँ सक्षम
हर चुनौती का हंस कर सामना
साहस और आत्मविश्वास के बल पर
बनाई अपनी अलग पहचान।

परिवार और कैरियर दोनों ही में
तालमेल बैठाती नारी का कौशल,
कामयाबी के कदम चूमें
आर्थिक और मानसिक रूप से
बनी आज आत्मनिर्भर।

सफलता की सीढ़ीयों पर हो अग्रसर,
जरूरत पड़ने पर अधिकारों को
हथियार बना आज हर क्षेत्र में
अपना लोहा मनवा रही है।

कल तक भावनात्मक रूप से
कमजोर नारी अपनी जिंदगी के
महत्वपूर्ण फैसले स्वंय लेकर
दांपत्य जीवन की खुशहाली के
आदर्श–बुलंदी से कहे यूं
हाँ, सिर्फ मैं ही काफी हुँ ।

स्वपना स्वर्णकार
कक्षा– बीएड तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–2023

मेरी माँ

मां तो जन्नत का फुल है,
प्यार करना उसका उसुल है,

दुनिया की मोहब्बत फिजुल है,
मां कि हर दुआ कबुल है,

मां को नाराज करना
इंसान तेरी भुल है,

मां के कदमो कि मिट्टी
जन्नत की धुल है।।

जिस के होने से मैं खुद को मुक्कमल मानता हुँ,
मेरे रब के बाद मैं बस अपनी माँ को जानता हुँ

मैं अपने छोटे से मुख से
कैसे करू तेरा गुणगान

माँ तेरी ममता के आगे
फीका सा लगता भगवान

श्रीकांत जायसवाल
कक्षा– बीएड तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–2023

मेरा हिन्दुस्तान

इस देष से है मेरी पहचान है
यही मेरा दिल यही मेरी जान है
है यह मेरा भारत जो कि महान है

यहाँ रहती हर कौम रहते पठान है
हाँ यह मेरा हिन्दुस्तान है

लड़ते हैं सुबह एक होते हर शाम है
उगती हर फसल उगते यहाँ धान है
तभी तो मेरा भारत देश महान है
हाँ यह मेरा हिन्दुस्तान है।

तोरण प्रसाद
कक्षा–बीएड तृतीय सेमेस्टर
सत्र– 2021–23

आओ झुककर सलाम

आओ झुककर सलाम करें उनको
जिनके हिस्से मे यह मुकाम आता है,
खुशनसीब होता है वह खुन
जो देश के काम आता है,
जमाने मे मिलते है आशिक कई,
मगर वतन से खुबसुरत कोई नही होता
नोटो से लिपटकर सोने मे सिमटकर मरे है कई,
मगर तिरंगें से खुबसुरत कोई कफन नही होता ।

लोकेन्द्र कुमार साहु
कक्षा–बी.एडद्वितीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

खुशियाँ कम और अरमान बहुत हैं
जिसे भी देखों परेशान बहुत हैं।
करीब से देखा तो निकला रेत का घर
मगर दूर से इसकी शान बहुत हैं ।
कहते हैं सच का कोई मुकाबला नही ,
मगर आज झुठ की पहचान बहुत हैं मुश्किल
से मिलता हैं शहर में आदमी
युं तों कहने को इंसान बहुत हैं।

नंदा भट्ट्
कक्षा–बी.एड तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

मां

मां तो आखिर होती है मां
अपने सपनों को त्यागकर तो
रातों को जागकर हमारी ख्वाहिशें करती है पूरी
उनके बिना जिंदगी अधूरी ममतामई आंचल है
जिंदगी जैसे गौरी और जानकी
खुशियों की तो यह है मोती
मां की आंखों में करुणा की ज्योति
रिश्तो को यह संजोए रखती
सारे दर्द खुद ही सह लेती
अपनों पर जब संकट आती है
मौत से भी लड़ जाती है
कभी दुर्गा कभी चंडी बन जाती
जब बात अपने बच्चों पर आती
रब की परछाई होती है मां
मां तो आखिर होती है मां

निशा
कक्षा–बी.एड तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

बचपन के मीठें दिन

कहां गया वो प्यार,
जों लफ्जों में बयान होता था।
बचपन के वो दिन जब
माँ–माँ कहकर मैं रोती थी।
पापा की गोद हंसाती थी
मम्मी की गोद में सोती थी।
दुनिया छोटी सी लगती थी,
हर सपना पूरा होता था।
यादें बची बचपन गया,
बहुरे अब दिन जवानी के।
दुनिया बुढ़ी जब माँ बाप से ,
लगे अब दिन सुनामी के
मांगे पूरी होती थी ,चाहें वो हो मनमानी की
अब सपने खुद की पूरे करने हैं ,
क्योंकि दिन हैं ये जवानी के ।
जिंदगी पड़ी पहाड़ सी,
बहाव कुछ ऐसे आने हैं
जब माँ बाप से दूर रहकर ,
सपने उनके सजाने हैं
कभी लगे की कब टूटे ,
दूरियाँ जो रब ने बनायी है।
थम जाउ उनकी गोद में ,
जिनके सपने पूरे करने आई हूँ।
मन न लगे जब जीने , जब कुछ ऐसे
घबराती हूँ।
याद तुम्हारी आती हैं
तन्हा खुद को सबसे पाती हूँ।
यादें तुम्हारी सताती हैं,
दिन –मिनटों में बाटें जाती हूँ।
दिनों की बात नहीं
पल–पल गिन कर बिताती हूँ।

रिमझिम वर्मा
कक्षा–डीसीए सत्र–2022–23

सफर में मुसीबत आए तो हिम्मत बढ़ जाती हैं ,
कोई रास्ता रोके तो जरुरत बढ़ जाती है
अगर बिकने का इरादा हो तो कम हो जाते हैं दाम अक्सर
ना बिकने की ठान ले तो कीमत बढ़ जाती है,

सफलता के लिए सिर्फ कल्पना ही नहीं
सार्थक कर्म भी जरूरी है सिढ़ियों को
देखते रहना ही पर्याप्त नहीं है सीढ़ियों पर
चढ़ना भी जरूरी है

भारती पाडें
कक्षा–बी.एड तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23

छत्तीसगढ़ सदा रहे हरियर

छत्तीसगढ़ सदा रहे हरीयर
सावन की मृदु हरियाली से।
जन जन का मनमीत भरा रहे
सद्भाव और खुशहाली से ।
शुभ कर्मो में सब नीत लगे रहे
छत्तीसगढ़ सुंदर गढ़ने में ।
हर क्षेत्र और हर कोने को
हर दिशा से सुंदर करने में।
सत्कर्म और सद्भाव का
जन–जन में होवे नवविकास।
जनहृदय सदा उल्लासित रहे
शुभ कर्मो का पावन हुलास ।
हो सस्य श्यामला यह धरती
मीत भरा अन्न भंडार रहे ।
हो खनिज द्रव्य अनुपम अपार
खुशियों की सुखद बहार बहे ।
जन मन में नित्य उमंग उठे
प्रगति शिखर छू लेने की।
कदमों में द्रुतगम गति जागे
सिड़ियाँ सभी चढ़ लेने की ।
दृढ़ निश्चय मन में भरा रहे
निज लक्ष्य बिंदु पा जाने की
कैसी भी बाधा आ जाए।
बेखौफ सदा टकराने की।

किरण बाला मिश्रा
कक्षा–बी.एड़ तृतीय सेमेस्टर
सत्र–2021–23